विचार बिन्दु

आशा अमर है उसकी आराधना कभी निष्फल नहीं होती। –महात्मा गाँधी

वैयक्तिक स्वास्थ्य व सार्वभौमिक कल्याण के आयुर्वेदिक सूत्र

आयुर्वेद में अगले वर्ष भर प्रस्तावित अतिथि-सम्पादकीय की रूपरेखा, आवश्यकता और औचित्य पर एक दृष्टि तय करना सार्थक रहेगा, जो स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य की रक्षा के सिद्धान्त को जन-सामान्य के मध्य लोकप्रिय कर सके। आइये देखते हैं इसकी आवश्यकता क्यों पड़ी? यह समझने के लिये आँकड़े तो बहुत हैं, जिनकी यथा-समय यहां छानबीन होगी, तथापि संक्षेप में सात कारण ऐसे हैं जिनको समझना उपयोगी होगा।

1. समकालीन विश्व ने एक ऐसी अर्थव्यवस्था, समाज और पर्यावरण विकसित कर लिया है, जहाँ स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य की रक्षा करना उत्तरोत्तर कठिन होता जा रहा है। जन-स्वास्थ्य पर हो रही वैश्विक शोध को देखते हुये यह मानने के उचित और पर्याप्त कारण हैं कि कथित विकास की दौड़ में स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य की रक्षा विश्व की प्राथमिकता में नहीं है। आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरणीय परिस्थितियों के घालमेल ने भोजन, जीवनशैली और मानव-व्यवहार को गंभीर रूप से दुष्प्रभावित किया है। अतः यदि आयुर्वेद के माध्यम से इसमें कोई सुधार संभव है तो उसे समझना और जीवन में आत्मसात करना उपयोगी होगा।

2. बीमारियों के भू-मंडलीय बोझ (ग्लोबल बर्डन ऑफ डिजीज, 2015) पर किये गये अध्ययन बताते हैं कि मानव स्वास्थ्य को गंभीर हानि पहुंचाने वाले 30 मुख्य कारक हैं। इनमें से एक भी ऐसा कारक नहीं है, जिसे आयुर्वेद के आहार, विहार, स्वास्थ्यवृत्त, सद्वृत्त,रसायन या जनपदोध्वंस के सिद्धान्त से सम्हाला न जा सके। बायोमेडिकल साइंस में हुई शोध के अनुसार गैर-संचारी रोगों के जितने जोखिम पहचाने जा सके हैं, उन पर विस्तृत विवेचन आयुर्वेद में तीस शताब्दियों पूर्व लिखी गयी संहिताओं में उपलब्ध है। और यहाँ मुझे यह आगाह करना अनिवार्य प्रतीत होता है कि उपरोक्त निष्कर्ष अतिशयोक्तिपूर्ण या कपोलकल्पित, आयुर्वेद का रोमांटिक-स्वरूप दिखने के नहीं कहा गया है। शोध-प्रकाशनों के आधार पर यह प्रमाण-आधारित दृष्टिकोण है। यह ज्ञान आज भी उपयोगी है।

3. विश्व बीमार है क्योंकि वैश्विक प्राथमिकता स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य की रक्षा नहीं बल्कि बीमार की चिकित्सा है। चिकित्सा व्ययसाय हो रही है। लोगों को बीमार होने देने और फिर दवा खिलाने में निवेश कोई बुद्धिमानी नहीं है। ऐसी परिस्थितियों के लिये अब दुनियाभर में नागरिकों द्वारा शासन-व्यवस्था को उत्तरदायी ठहराने की प्रवृत्ति और शक्ति बढ़ती जा रही है। गैरसंचारी रोगों के कारण होने वाली असमय मृत्यु, रुग्णता एवं जीवन की गिरती हुई गुणवत्ता और इस सबका वित्तीय बोझ सहन करने के लिये कोई तैयार नहीं है। स्वाभाविक है कि आयुर्वेद में माध्यम से स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य की रक्षा करना कम खर्चीला काम होगा।

4. संचारी बीमारियों से बचाव के लिये टीके, शल्य-चिकित्सा एवं बीमारियों के उपचार में बायोमेडिकल साइंस को अच्छी सफलता मिली है। परंतु गैर-संचारी रोगों से बचाने के लिये बायोमेडिकल साइंस की व्यापक असफलता लोगों को निरंतर बीमारी में धकेलती जा रही है। जो जितना धन-संपन्न है, वह उतना ही अधिक धन बीमारी के उपचार में गवां रहा है। हितकारी आहार, विहार, स्वास्थ्यवृत्त, सद्वृत्त, योग, व्यायाम आदि उपायों से स्वस्थ्य रहने की युक्ति और व्याधिक्षमत्व बढ़ाने का विस्तृत समाधान आयुर्वेद देता है। अतः इनको सीख और समझकर जीवन में अपनाना उपयोगी रहेगा।

5. बायोमेडिकल साइंस द्वारा गैर-संचारी रोगों से लोगों को बचाव करने में पूर्णतः असफल रहने के बाद क्या हुआ? गत एक दशक से जीवन-शैली पर शोध के नाम पर आयुर्वेद जैसी विधाओं में उपलब्ध ज्ञान की रिसाइक्लिंग-रिपैकेजिंग की खानापूर्ति के अलावा कोई नवाचारी मूल शोध नहीं हुई। आयुर्वेद में तो तीस शताब्दियों पहले से जीवन-शैली पर ठोस ज्ञान उपलब्ध है। इसे लोगों तक पहुँचाना आवश्यक है, अन्यथा आयुर्दोक्त-ज्ञान को नये-नये तकनीकी नामों से हमें वापस परोसा जाने लगा है। एक उदाहरण देखिये। वर्ष 2017 में प्रोग्रेस इन कार्डियोवैस्कुलर डिजीजेजनामक जर्नल में विश्वभर के 15 प्रतिष्ठित वैज्ञानिकों द्वारा एक रिव्यू-पेपर लिखा गया। लेखकों की सूची में भारत के प्रतिष्ठित शोध संस्थान के एक वैज्ञानिक भी शामिल हैं। इस प्रकाशन में बेहतर हेल्थ-स्पान के लिये तथाकथित नवीन सिद्धान्त के नाम से पी-4 हैल्थ स्पेक्ट्रम (प्रेडिक्टिव, प्रिवेन्टिव, पर्सनलाइज्डव पार्टीसिपेटरी) का कथित नवाचार बड़े जोर-शोर से प्रचारित किया गया। परन्तु विचित्र बात यह है कि भारतीय लेखक सहित इन लेखकों ने आयुर्वेद के सिद्धांतों से उधार लिये गये तथाकथित पी-4 मॉडल को आयुर्वेद की देन या आयुर्वेद के सिद्धांतों के आधार पर विकसित किया जाना नहीं बताया। मात्र आयुर्वेदोक्त प्रकृति पर अपने दो-चार प्रकाशनों का रेफरेन्स लगवाकर भारतीय लेखक ने भी लेखक होने के कर्तव्य की इतिश्री कर लिया।

विस्मयकारी है कि ये सब वैज्ञानिक इस बात को कैसे और क्यों नज़रअंदाज कर गये कि चरकसंहिता और सुश्रुतसंहिता में शायद ही कोई ऐसा सूत्र हो जहाँ फलश्रुति (प्रेडिक्टिव) स्वस्थस्य स्वास्थ्य रक्षणं (प्रिवेन्टिव), प्रकृति अनुसार पुरुषं पुरुषं वीक्ष्य (पर्सनलाइज्ड) तथा वैद्य, औषधि, नर्स और रोगी की साझेदारी या भिषग्द्रव्याण्युपस्थाता रोगी पादचतुष्टयम् (पार्टीसिपेटरी) के माध्यम से हितायु-सुखायु (हेल्थ-स्पान) दिग्दर्शक सिद्धांत किसी से छिपे हों। शारीरिक, मानसिक व आत्मिक स्वास्थ्य की समन्वित समग्रता, युक्ति-व्यपाश्रयता, वैयक्तिक-उन्मुखता एवं प्रकृति-अनुकूलता आयुर्वेद की मूलभूत विशिष्टतायें हैं। चिंताजनक है कि आयुर्वेद पर शोध करने में जीवन का लंबा समय और देश का धन खर्च करने वाले वैज्ञानिक समेत किसी लेखक में यह स्वीकार करने की अकादमिक-सत्यनिष्ठा नहीं थी कि तथाकथित पी-4 हेल्थ स्पेक्ट्रम सीधे-सीधे आयुर्वेद से लिया गया है। आयुर्वेद के ज्ञान की चोरी नयी बात नहीं है, परन्तु आयुर्वेद का पूर्ण सन्दर्भ दिये बिना इसके सिद्धांतों की डकैती का यह एक ताज़ा उदाहरण है। इन तथ्यों को यहाँ देने का तात्पर्य यह है कि भारतीय समाज को अब आयुर्वेद को गंभीरता से लेने और जीवन में उतारने की जरूरत है।

आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरणीय परिस्थितियों के घालमेल ने भोजन, जीवनशैली और मानव-व्यवहार को गंभीर रूप से दुष्प्रभावित किया है। अतः यदि आयुर्वेद के माध्यम से इसमें कोई सुधार संभव है तो उसे समझना और जीवन में आत्मसात करना उपयोगी होगा।

6. अस्वास्थ्यकर रहन-सहन एवं व्यवहार के कारण विश्व में सामाजिक एवं आर्थिक संकट निरंतर बढ़ रहा है। जैसा कि पहले कहा गया है, आयुर्वेद की संहिताओं के निष्कर्ष तो कम से कम 3000 साल पुराने हैं। अब तो समकालीन वैज्ञानिक अध्ययनों के निष्कर्ष भी आयुर्वेदोक्त बातों को सिद्ध करते हैं कि उम्र-आधारित रोगजनन (ऐज-रिलेटेड पैथोजेनेसिस) को यथा-संभव पीछे किया जाना चाहिये। आधुनिक विज्ञान में इसके लिये जिन उपायों–टाइमलेस मेडिसिन, हेल्दी लिविंग, हेल्दी न्यूट्रिशिन, फिजीकल एक्टीविटी तथा धूम्रपान निषेध आदि–की बात हो रही है, उन पर आयुर्वेद में उपलब्ध जानकारी का हमें उपयोग करना चाहिये।

7. स्वस्थ व्यक्ति को स्वस्थ रखने के बज़ाय बीमारियों को ठीक करने के पक्ष में दीर्घकालिक पूर्वाग्रह के कारण अंतर्राष्ट्रीय प्रकाशनों में असमय-मृत्यु को एक नापने योग्य आँकड़ा मानाजाता है। जबकि आयुर्वेद हितकारी आहार, विहार, सद्वृत्त, स्वास्थ्यवृत्त, एवं जरा-व्याधि नाशक रसायनों को व्यक्ति-व्यक्ति के लिये सुझाता है। विश्व समुदाय जब तक हितायु और सुखायु देने वाली जीवनशैली पर प्रमाण-आधारित सलाह देने वाले आयुर्वेदाचार्यों एवं उन्हें अपनाने वाली जनसंख्या को प्रोत्साहित नही करता, तब तक उत्तम स्वास्थ्य दूभर ही रहेगा।

इन्ही तमाम कारणों से आने वाले समय में आयुर्वेद में स्वास्थ्य-रक्षण के आयामों पर यहाँ विश्लेषण होगा। अस्वास्थ्यकर जीवनशैली के कारण रोगोत्पत्ति एवं उनसे निपटने में वैश्विक वित्तीय बोझ का आंकलन होगा। आयुर्वेद द्वारा जीवनशैली-आधारित रोगों से निपटने के लिये विविध सुझाव और उपयोगिता,उन प्रमाणों के प्रकाश में प्रस्तुत किये जायेंगे जो आधुनिक शोध और अनुभवजन्यज्ञान में उपलब्ध होंगे। दूसरे भाग में उन रोगों का विश्लेषण किया जायेगा जो, विश्व में बायोमेडिकल चिकित्सा पद्धति को दी गई भारी प्राथमिकता एवं बजट के बावजूद, विश्व को बीमार कर रहे हैं। इनमें हृदय रोग, मानसिक रोग, कैन्सर, मधुमेह, एवं श्वसन तंत्र, किडनी, लीवर आदि जैसे वाइटल ऑर्गन्स के रोग, मोटापा आदि शामिल हैं। यहाँ रोग-विशेष के सन्दर्भ में ही जीवनशैली एवं रसायन चिकित्सा आदि का विश्लेषण प्रमाण-आधारित सुझाव होंगे। संक्षेप में, चयनित रोगों और उनसे बचने के लिये आयुर्वेद, शोध, और अनुभव से प्रमाणित सलाह का विस्तृत समावेश किया जायेगा। तीसरे भाग में आयुर्वेद के उस समेकित स्वरूप की चर्चा होगी जिसमें दिनचर्या, रात्रिचर्या, स्वास्थ्यवृत्त, मानसिक सद्वृत्त, चारित्रिक सद्वृत्त, वैयक्तिक एवं सामाजिक सद्वृत्त, एवं योग, ध्यान और प्राणायाम आदि शामिल हैं। तुलनात्मक रूप से देखें तो जहाँ दूसरे भाग में रोग-विशेष पर ध्यान केन्द्रित कर उससे बचाव के लिये आयुर्वेदोक्त सलाह का विश्लेषण होगा, वहीं तीसरे भाग में आहार-विहार आदि के पृथक-पृथक घटकों को प्रस्तुत करते हुये उनके पालन से विविध रोगों से बचाव का समग्र विश्लेषण होगा।

अंत में, चौथे भाग में उन समस्याओं की ओर ध्यान आकृष्ट करते हुये आयुर्वेदोक्त समाधन प्रस्तुत किया जायेगा जिसे वायु, जल, देश एवं काल के प्रदूषण के कारण होने वाले जनपदोध्वंस का सिद्धान्त कहा जाता है। यह आवश्यक है क्योंकि जब व्यक्ति प्रज्ञापराधी होता है तो वह केवल स्वयं बीमार होता है, समाज प्रज्ञापराधी होता है तो सामाजिक-सांस्कृतिक और आर्थिक व्यवस्था चौपट होती है, और जब शासन-व्यवस्था प्रज्ञापराधी होने लगती है तो जनपदोध्वंस होता है।

पत्रकारिता के सर्वोच्च वैश्विक मूल्यों और मानदंडों के अनुरूप यहाँ प्रस्तुत प्रमाण-आधारित सामग्री में आप निष्पक्षता, सत्यवादिता, पारदर्शिता, न्यायप्रियता, उत्तरदायित्व, प्रामाणिकता और स्पष्टोक्ति पायेंगे। आशा है इस जानकारी का उपयोग आप अपनी आयु को हितकारी एवं सुखकारी बनाने में करेंगे। हाँ, केवल ज्ञान की उपलब्धता स्वास्थ्य में सुधार नहीं ला सकती। ज्ञान को कार्य से जोड़ना और जीवन में आत्मसात करना आवश्यक है। आयुर्वेद में ज्ञान तो बहुत उपलब्ध है पर भारतीयसमाज ने इस ज्ञान को ऐसा भुलाया कि आज भारत अनेक रोगों की वैश्विक राजधानी बनता जा रहा है। यहाँ प्रस्तुत की जाने वाली जानकारी इन समस्याओं से मुक्त होने में आपकी मदद कर सके तो उत्तम होगा।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ. दीप नारायण पाण्डेय
(इंडियन फॉरेस्ट सर्विस में वरिष्ठ अधिकारी)
(यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं।)

कटीले फूल

- **पायलट को भाजपा ने आफर दिया कैबिनेट मंत्री पद का।**

जिनके खून में पार्टी के जर्म हैं उन्हें हिलाना आसान नहीं।

- **कांग्रेस 30 अक्टूबर तक संगठन चुनाव पूरा कराने में जुटी।**

लगता है नेहरू जी द्वारा छोड़ी विरासत को बढ़ाने का एक और प्रयास है।

- **मोटा लेन-देन कहने वाले 60 हजार लोगों को नोटिस जारी होंगे।**

भैया, यह पहले ही हो जाता तो न लाइन में लगने की जरूरत पड़ती न नोट बदलने की।

- **भीम पे एपः अंगुली से भुगतान, किसी को जोड़ा तो मिलेंगे रू. 10**

कांग्रेस व बसपा की विरासत में पे एप के नाम पर सीधा दखल।

पहाडियों में लगी आग को बुझाने के प्रयास जारी

माउंट आबू, (निसं)। माउंट आबू पर्वतीय पर्यटन स्थल में वलैजवॉक सनसेट की ओर पहाडियों में लगी भीषण आग नहीं बुझने लोगों में खौफ देखा गया। माउंट आबू में लगी भीषण आग को बुझाने के लिए आर्मी,एयरफोर्स सीआरपीएफ, पुलिस के जवानों व वनकर्मी मुस्तैदी से जुटे हुए हैं। फिर पता चला कि आग काबू में नहीं आ रहा है तो उसे बुझाने के लिए सीएमओ ने हेलीकॉप्टर की मदद मांगी।

रेंजर भरत सिंह देवडा के अनुसार दुर्गम पहाडियों के बीच लगी आग को काबू कर पाना असंभव सा नजर आ रहा है। नगरपालिका,स्वंयसेवी संगठन,

- **आस-पास का क्षेत्र खाली करवाया ताकि जान को खतरा न रहे**

वनकर्मी व श्रमिक इस दानावल को बुझाने में जुटे हुए हैं परन्तु लगातार आग बढ़ती जा रही है। एयरफोर्स गेल,जेके सीमेंट,माउंट आबू आबूरोड, पिण्डवाडा नगरपालिकाओं की दमकलें आग को बुझाने में जुटी हुई हैं। मौके पर मौजूद उपखण्ड अधिकारी सुरेश कुमार ओला ने बताया कि सुबह से ही काफी प्रयास किए जाने के बावजूद भी आग काबू में नहीं आती दिखी तो तुरन्त सीएमओ से अनुरोध कर तत्काल हेलीकाप्टर की मदद मांगी गई। हेलीकॉप्टर के पहुंचने बाद जब दानावल बुझाने की कार्यवाही की तब जाकर लोगों ने राहत की सांस ली हेलीकॉप्टर द्वारा लगातार उस स्थान पर पानी का छिडकाव किया जा रहा है। अभी तक भी हेलीकॉप्टर द्वारा पानी का छिड़काव किया जा रहा है। तथा उसके आस -पास के क्षेत्र में रहने वाले आदिवासियों को वह क्षेत्र खाली करवा दिये गये। ताकि जान का खतरा कम रहे।

पालिका अध्यक्ष सुरेश थिंगर के अनुसार आग छीपाबेरी, गंभीरीनाला, देवांगन, सनसेट प्वाइंट, अनादरा की पहाडियों से होते हुए धोबीघाट क्षेत्र से लेकर शांति शिखर के पीछे लगी आग पिछली दशाब्दी का सर्वाधिक भीषण दानावल देखा गया है। जिससे पूरे आबू के पहाड़ व घने जंगल प्रभावित हुए हैं। समाचार लिखने तक हेलीकॉप्टर से पानी का छिड़काव जारी रहा।

माउंट आबू की वलैजवॉक सनसेट पहाडियों में लगी आग को हेलीकॉप्टर व दमकलों से बुझाने के प्रयास जारी हैं।

मसूदा की कई पंचायतों में 14 माह से मनरेगा श्रमिकों को नहीं मिली मजदूरी

मसूदा, (कासं)। मसूदा पंचायत समिति के कई ग्राम पंचायतों में पिछले 14 माह से नरेगा में कार्यरत मेटों व श्रमिकों को मजदूरी नहीं मिलने से श्रमिकों को आर्थिक संकट से जूझना पड़ रहा है। इससे परिवार के पालन-पोषण को लेकर खासी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है।

मसूदा पंचायत समिति के ग्राम धोलादातां, मसूदा सहित कई ग्राम पंचायतों में मनरेगा के आला अधिकारियों की अनदेखी के चलते श्रमिकों व मेटों को भुगतान नहीं मिलने से इन गरीब परिवारों को अपने परिवार के लिए दो जून रोटी के लिए दर-दर भटकना पड़ रहा है। पिछले एक साल से अधिक समय से मसूदा पंचायत समिति कार्यालय व आला अधिकारियों से मजदूरी दिलवाने की गुहार लगाने के बाद भी कोई ठोस कार्यवाही नहीं होने से श्रमिकों में खासा रोष व्याप्त होने लगा है। साथ ही गांव में रोजगार देने के चलाए जाने वाले नरेगा कार्यों को लेकर ग्रामीणो में संशय गहराने लगा है। सरकार व सरकारी कार्यालयों के बीच फंसे बजट ने ग्रामीणों की हालत दयनीय कर दी है।

मनरेगा श्रमिक बुद्धा सिंह का कहना है कि किसी तरह नरेगा कार्य में मजदूरी करके परिवार को पाल रहे हैं लेकिन अब वहां भी पिछले काफी समय से मनरेगा की मजदूरी नहीं मिलने से आर्थिक संकट का सामना करना पड़ रहा है। परिवार को कोई सहारा नहीं होने से अब दो वक्त की रोटी को लेकर मशक्कत करनी पड़ रही है।

हनुमान सिंह मनरेगा मेट धोलादातां का कहना है कि पिछले 14 माह से मनरेगा की मजदूरी पाने के लिए पंचायत समिति कार्यालय व ग्राम पंचायत के चक्कर काट रहा हूं। लेकिन अब तक भुगतान नहीं होने से परिवार के भरण पोषण को लेकर खासी परेशानी हो रही है। मात्र बजट नहीं होने का जवाब देकर इन कार्यालयों से रवाना कर देते हैं।

- **श्रमिकों को परिवार के पालन पोषण में आ रही दिक्कत**
- **पिछले एक साल से मांग रहे मजदूरी, नहीं हुई ठोस कार्रवाई**

महिला श्रमिक जमीला का कहना है कि परिवार को दो वक्त की रोटी मिले, उसको लेकर नरेगा में कार्य किया। लेकिन एक साल बीत जाने के बाद भी मजदूरी नहीं मिलने से स्थिति दयनीय हो गई है।

महिला श्रमिक सायरी का कहना है कि सरकारी अधिकारियों की मनमानी व लापरवाही का खामियाजा हम जैसे गरीब मजदूरों को भुगतान पड़ रहा है। पूरा काम करने के बाद भी मजदूरी पाने के लिए दर दर भटकना पड़ रहा है। अब परिवार चलाना दूभर हो गया है।

अनिल अरोड़ा सहायक अभियंता मनरेगा, मसूदा का कहना है कि पूर्व में पोस्ट आफिस में जिन श्रमिकों व मेटों के खाते थे। उनके भुगतान पर रोक लगा दी गई थी। उसके बाद इन श्रमिकों व मेटों के भुगतान को लेकर बजट नहीं आने से भुगतान नहीं हो पा रहा है। उक्त मामला राज्य सरकार के पास विचाराधीन है।

रूणिचा कुएं में तीन दशक बाद आया पानी

रामदेवरा, (निसं)। कस्बे में 600 साल पुराने बाबा रामदेव के हाथों से निर्मित रूणिचा कुएं में तीन दशक बाद अचानक शुक्रवार शाम को जलधारा बहने लगी। रूणिचा कुएं में जलधारा की आवाज सुनने के लिये लगातार भक्तों के आने का सिलसिला बना हुआ है।

कुएं के अंदर से झरने की आवाज आने की खबर रामदेवरा और आस-पास के क्षेत्र में आग की तरह फैल गई। इसको ग्रामीण एवं बाबा रामदेव के श्रद्धालु बाबा रामदेव का चमत्कार मानते हुए रूणिचा कुएं पर उमड़ने लगे। बाबा रामदेव की समाधि स्थल से डेढ़ किलोमीटर दूर रूणिचा कुएं में बाबा रामदेव के वंशज भाखरसिंह तंवर दर्शन करने कल शाम को गए तो कुएं के अंदर जलधारा बहने की आवाज सुनाई दी। उसके बाद से लोगों का आज सुबह से लगातार रूणीचा कुएं पर आने का सिलसिला बना हुआ है।

बाबा रामदेव ने विक्रम संवत 1442 में समाधि लेने से पूर्व इस क्षेत्र में भूमिगत पेयजल की सुविधा के लिए रूणिचा कुआं खुदवाया तथा बारिश के पानी का संग्रहण करने के लिए पवित्र रामसरोवर का निर्माण करवाया जो सदियों तक इस क्षेत्र के लोगों का पेयजल संकट मिटाते रहे। 250 फुट गहरा कुआं व पवित्र रामसरोवर तालाब यात्रियों के लिये आज भी आस्था के प्रमुख केन्द्र बने हुए हैं। रामदेवरा निवासी बाबा रामदेव के वशंज जसवंतसिंह ने बताया कि रूणिचा कुआ पिछले तीन दशक से पूरा सूखा पड़ा था। 1990 तक इस कुएं से इंजन लगा सिंचाई की जाती थी। भाखरसिंह तंवर ने बताया कि रामसरोवर में नहर के जमा पानी के कारण आस-पास के क्षेत्र का जलस्तर बढ़ गया है। ये बाबा का चमत्कार ही है कि 30 साल से सूखे कुएं में पानी आना शुरू हो गया।

रामदेवरा के रूणिचा कुएं में तीन दशक के बाद आया पानी जिसे लोग चमत्कार मान रहे हैं।

ज़नवाणी

देश के संत-धर्मगुरू आमजन का उत्थान करें

भारत में अधिकांश संत दुराचारी, अपराधी, भोगवादी, पाखंडी, ठग, तस्कर, दलाल, आतंकी, राजनीतिबाज, कट्टरपंथी बन बैठे हैं। आसाराम, रामपाल, रामवृक्ष, राधेमां, राह रहीम सिंह जैसे अन्य अनेकों सुविख्यात संतों के खिलाफ देशद्रोह, दुष्कर्म, बलात्कार, हत्या, अवैध हथियारों का जखीरा, समाज में सांप्रदायिक घृणा, द्वेष फैलाकर राजनीति की रोटियां सेकने, ठगी करने, भाईचारा बिगाड़ने जैसे हीन और संगीन अपराधों के मुकदमें चल रहे हैं। पहले भगवा वेशधारी संतों, मंदिरों, शंकरचार्यों, देवताओं, धर्मगुरूओं के प्रति जनता का गहरा श्रद्धाभाव और आदर-सत्कार था। भगवा संत कभी शराब बंदी की मांग नहीं करते। किसानों की आत्म हत्या को लेकर हमेशा खामोश रहते हैं। मीट की दुकानें बंद कराने से मांस का कारोबार करने वाले गरीब मुस्लिम ही नहीं, हिंदु किसान-पशुपालक भी बर्बाद हो जाएंगे। उनके पशु नहीं बिकेंगे तो आवारा पशुओं की समस्या विकराल हो जाएगी, खेतीबाड़ी उजड़ जाएगी। साधु-संतों का काम क्या लोगों को लड़ाना-भिड़ाना है? ऐसे कामों से तो हिंदू धर्म और संत समाज का पतन ही होने वाला है। विनाश पर उतारू कोई भी शक्ति नफे में नहीं रहती।

–चौ.मामराज सिंह,
सामाजिक कार्यकर्ता, सीकर (राज.)

कार्टूनी नज़रिया

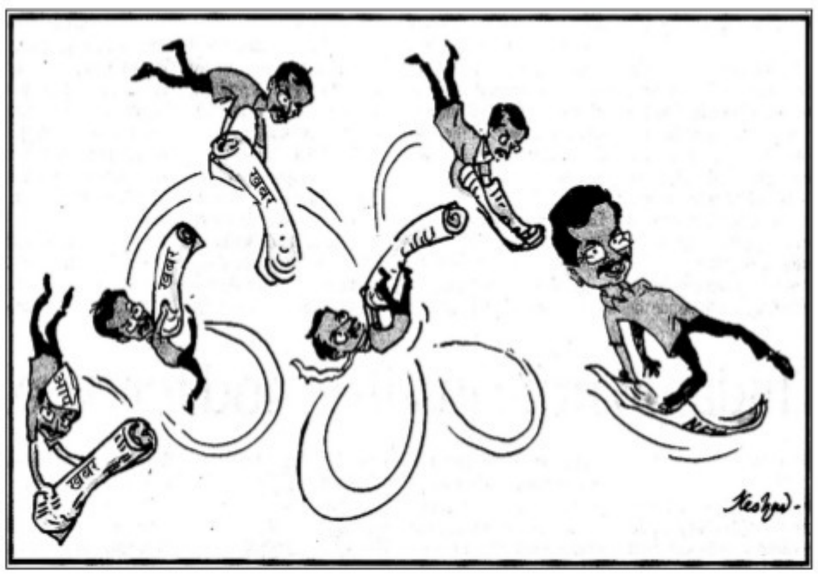

हिंदू से साभार

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

रविवार 16 अप्रैल, 2017

वैशाख मास, कृष्ण पक्ष, पंचमी तिथि, रविवार, विक्रम संवत 2074, ज्येष्ठा नक्षत्र, वारियान योग, कौलव करण, चन्द्रमा आज सायं 4:39 पर धनु राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थितिः सूर्य–मेष, चन्द्रमा–वृश्चिक, मंगल–वृष, बुध–मेष, गुरू–कन्या, शुक्र–मीन, शनि–धनु, राहु–सिंह, केतु–कुम्भ राशि में।

ज्येष्ठा नक्षत्र सायं 4:39 तक, वारियान योग दिन 11:52 तक है।

इसके पश्चात मूल नक्षत्र, परिद्य योग, तैतिल करण आरम्भ होगा।

आज सर्वार्थ सिद्धि योग सायं 4:39 से सूर्योदय तक है।

आज इस्टर सण्डे है।

श्रेष्ठ चौघड़ियाः चर 7:41 से 9:16 तक, लाभ-अमृत 9:16 से 12:27 तक, शुभ 2:02 से 3:38 तक।

राहुकालः 4:30 से 6:00 तक।

मेष

नवीन कार्यों को सायंकाल में करना ठीक रहेगा। दिन के मध्यान्ह पूर्व में अष्टम चन्द्र शुभ नहीं है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है।

वृष

घर में आपसी सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। परिवार में प्रसन्नता-हर्षोल्लास का माहौल रहेगा। सूर्यास्त पश्चात अनावश्यक धन खर्च हो सकता है।

मिथुन

घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

कर्क

अपने अति आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। महत्वपूर्ण कार्य योनजा का क्रियान्वयन हो सकता है। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

सिंह

घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कारणों से मानसिक तनाव बना रहेगा। अतिथियों के आगमन से दिनचर्या अस्त-व्यस्त हो सकती है।

कन्या

नये-पुराने मित्रों से मुलाकात हो सकती है। मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं। सूर्यास्त पश्चात अतिथियों का आगमन हो सकता है।

तुला

स्वास्थ्य का ध्यान रखे। परिवार में वाद-विवाद टालना ठीक रहेगा। धार्मिक कार्यों पर धन खर्च हो सकता है। सूर्यास्त पश्चात शुभ संदेश प्राप्त होंगे।

वृश्चिक

मनःस्थिति ठीक रहेगी। अपने आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। ग्रह स्थिति सकारात्मक है। आज प्रयासों में सार्थक सफलता मिल सकती है।

धनु

पारिवारिक कारणों से मन में असंतोष बना रहेगा। अनावश्यक धन खर्च होगा। सूर्यास्त पश्चात घर-परिवार में मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं।

मकर

धार्मिक-सामाजिक समारोह में भाग लेने का अवसर मिलेगा। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है। आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे।

कुंभ

अपने अटके हुए कार्य को करने का प्रयास करें। आज प्रयासों में सार्थक सफलता मिल सकती है। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

मीन

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक संदेश प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। परिवार में प्रसन्नता-हर्षोल्ला का माहौल रहेगा।